

**भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम की स्वर्णजयन्ती
वैज्ञानिक विक्रम साराभाई को याद करने का अवसर**

-डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र

प्रस्तावना

वर्ष 2013 भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम का स्वर्णजयन्ती वर्ष है। आज से 50 वर्ष पहले 21 नवम्बर 1963 को भारत ने एक 'छोटा-सा' राकेट छोड़कर अंतरिक्ष में एक बहुत 'बड़ा कदम' रखा था। पिछले पचास बरसों में भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम ने एक लम्बा फासला तय किया है। चांद तक मिशन पहुंचाने के बाद भारत अब मंगल के लिए अभियान भेजने की तैयारी कर रहा है। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का पचास साल का यह सफर बड़ा ही रोचक तथा प्रेरणादायी है। इसके पीछे सुविख्यात वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई की दूरदृष्टि तथा कल्पना की अहम् भूमिका है। उन्हें भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का शिल्पकार कहा जाता है। बात सन् 1961 की है जब डॉ. साराभाई ने अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम की एक विस्तृत योजना भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को सौंपी थी। नेहरूजी को यह योजना पसंद आयी तथा भारत सरकार द्वारा उसे स्वीकार कर लिया गया। बस वही से देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ। सन् 1962 में परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत अंतरिक्ष अनुसंधान समिति का गठन किया गया। डॉ. साराभाई को इस समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।



विक्रम साराभाई

अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत



नाइक अपाचे रॉकेट

अंतरिक्ष कार्यक्रम की स्थापना के साथ डॉ. साराभाई को एक उचित स्थान की तलाश थी जहां से राकेट अंतरिक्ष में भेजे जा सकें। वह जगह चुनी गयी केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम के पास भारतीय प्रायद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित थुम्बा में। यहां से देश का पहला राकेट छोड़ने पर काम चल रहा था। उस दौरान भारत के छह वैज्ञानिकों को अमेरिकी अंतरिक्ष संस्था 'नासा' में साउंडिंग राकेट के प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। इनमें मिसाइलमैन के नाम से सुप्रसिद्ध डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भी शामिल थे। साउंडिंग राकेट वायुमंडल के अध्ययन के लिए छोड़े जाते हैं। भारत ने 21 नवम्बर 1963 को अमेरिका से प्राप्त 'नाइक अपाचे' नामक पहले साउंडिंग राकेट को थुम्बा से छोड़कर अपने अंतरिक्ष अनुसंधान की शुरुआत की। सन् 1965 में थुम्बा में अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना की गयी तथा उसके दो वर्ष बाद ही

अहमदाबाद में उपग्रह दूरसंचार भूकेन्द्र स्थापित किया गया। देश के वैज्ञानिक राकेट प्रौद्योगिकी तथा ईंधन विकसित करने में लगे रहे। उन्होंने 20 नवम्बर 1967 को थुम्बा से रोहिणी-75 नामक स्वदेशी राकेट का प्रक्षेपण किया।

15 अगस्त 1969 को डॉ. साराभाई की अध्यक्षता में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का गठन किया गया। इसके साथ ही देश में उपग्रहों तथा उन्हें अंतरिक्ष में भेजने के लिए राकेटयान विकसित करने का फैसला लिया गया। भविष्य के राकेटों के प्रक्षेपण के लिए आंध्र प्रदेश स्थित श्रीहरिकोटा रेन्ज को नए प्रमोचन केन्द्र के रूप में विकसित किया गया। शुरू में इसरो द्वारा ऐसे राकेट



इसरो-भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का अग्रणी संगठन तैयार करने की योजना बनायी गयी जिनसे लघु उपग्रहों को पृथ्वी की नजदीकी कक्षा में भेजा जा सके। इन्हें सैटेलाइट लांच वेहिकल यानी संक्षेप में एस.एल.वी. कहा गया।

प्रक्षेपण प्रणालियों तथा उपग्रहों का विकास

यद्यपि भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की आधारशिला विक्रम साराभाई ने रखी लेकिन उसे आगे बढ़ाने में डॉ. अब्दुल कलाम तथा प्रो. सतीश धवन का बहुमूल्य योगदान है। डॉ. कलाम एस.एल.वी.-3 कार्यक्रम के प्रमुख थे। उनकी टीम द्वारा विकसित राकेट का 10 अगस्त 1979 को किया गया पहला परीक्षण तो असफल रहा किन्तु अगले ही वर्ष 18 जुलाई को किया गया दूसरा परीक्षण पूरी तरह सफल रहा। इस राकेट ने रोहिणी नामक 35 किलोग्राम के उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया। एस.एल.वी. की बाद की उड़ानें भी सफल रहीं। इस सफलताओं के बाद और ज्यादा शक्तिशाली राकेटों के विकास पर बल दिया गया। इन्हें आर्गमेंटेड सैटेलाइट लांच वेहिकल यानी ए.एस.एल.वी. कहा गया।



ए.एस.एल.वी. रॉकेट

ए.एस.एल.वी. भारत का एक महत्वपूर्ण प्रमोचन यान है जो तकनीकी क्षमताओं के प्रदर्शन और उनके वैधीकरण के लिए बनाया गया। इसे कम लागत के मध्यवर्ती यान के रूप में विकसित किया गया। इसकी 1987 तथा 88 में की गयी पहली दो उड़ानें सफल नहीं रही लेकिन तीसरी उड़ान कामयाब रही तथा उसने 'स्ट्रॉस-सी' नामक उपग्रह को अंतरिक्ष में स्थापित कर दिया। ए.एस.एल.वी. की सफलता के बाद और भी ज्यादा शक्तिशाली पोलर सैटेलाइट लांच वेहिकल, पी.एस.एल.वी. का विकास किया गया। यह नया राकेट चार खंडों का बना था। पी.एस.एल.वी. की

1994 से लेकर अब तक की समस्त उड़ानें सफल रही हैं। इसने सफलता के कीर्तिमान बना दिए हैं। इस राकेट के जरिए सुदूर संवेदन के क्षेत्र में राष्ट्र ने बहुत शोध किया है। अब तक इसकी कुल 23 उड़ानें हो चुकी हैं और भारत तथा दूसरे देशों के अनेक उपग्रह अंतरिक्ष में पहुंचाए जा चुके हैं। विगत 9 सितंबर 2012 का दिन भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में स्वर्णिम दिन था जब इसरो के पीएसएलवी सी-21 राकेट ने फ्रांस तथा जापान के दो उपग्रहों को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित कर दिया। इस तरह भारत ने मिशन भेजने का शतक पूरा कर लिया। अब तक भारत ने स्वदेशी राकेटों के जरिए कुल 62 देशी तथा 35 विदेशी उपग्रह अंतरिक्ष में प्रेषित किए हैं।

भारत को उपग्रहों के निर्माण में भी कुशलता प्राप्त है। देश का पहला कृत्रिम उपग्रह आर्यभट्ट 1975 में रूस के रॉकेट के जरिए छोड़ा गया। देश में ही डिजाइन तथा विकसित इस उपग्रह का भार 368 किलोग्राम था। उसकी अपेक्षित आयु छह साल थी। लेकिन वह 17 वर्षों तक राष्ट्र को अपनी सेवाएं देता रहा। उसके बाद कहीं भारी तथा समुन्नत भास्कर-1 तथा भास्कर-2 को रूसी प्रक्षेपणयान से अंतरिक्ष में भेजा किया गया। ये भारत के शुरुआती सुदूर संवेदन उपग्रह थे जिन्हें क्रमशः 7 जून 1979 तथा 20 नवम्बर 1980 को अंतरिक्ष में भेजा गया।



पी.एस.एल.वी. रॉकेट

ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान जिसे संक्षेप में पी.एस.एल.वी. कहा जाता है, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा संचालित एक महत्वाकांक्षी प्रक्षेपण प्रणाली है। पी.एस.एल.वी. की ऊँचाई 44.4 मीटर है। इसके चार चरण हैं जो एकांतर से ठोस एवं द्रव नोदन प्रणालियों का उपयोग करते हैं। इसके प्रथम चरण में 138 टन नोदक होता है जो विश्व के बृहद् ठोस नोदक बूस्टरों में से एक माना जाता है। इसके छह ठोस स्ट्रैप-ऑन नोदक मोटर हैं जिनमें से प्रत्येक में बारह टन ठोस नोदक होता है। दूसरे चरण में 41.5 टन द्रव नोदक रहता है। तीसरे चरण में 7.6 टन ठोस नोदक रहता है तथा चौथे में 2.5 टन द्रव नोदक सहित जुड़वाँ इंजन रहता है। इसी ताकतवर राकेट ने भारत के चन्द्रयान-1 मिशन को सफलतापूर्वक चांद तक पहुंचाया था।

चन्द्रयान-1

22 अक्टूबर 2008 का दिन देश के लिए बहुत मायने रखता है जब सुबह 6 बजकर 20 मिनट पर भारत के चन्द्रयान-1 का सफल प्रक्षेपण किया गया। विज्ञान के क्षेत्र में देश की प्रतिष्ठा को चार-चाँद लगाने वाली यह एक अभूतपूर्व घटना थी। 8 नवम्बर 2008 को इसे चांद की कक्षा में 100 किलोमीटर की ऊँचाई पर स्थापित किया गया। फिर इसके बाद 14 नवम्बर 2008 को इस मिशन से 'मून इंपैक्ट प्रोब' नामक उपकरण को चन्द्रमा के धरातल पर सफलतापूर्वक उतारा गया। इस

उपकरण ने धरातल पर मौजूद रसायनों के विश्लेषण से वहां जल होने का अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किया। चन्द्रयान-1 मिशन 30 अगस्त 2009 तक काम करता रहा। इस उपलब्धि को अमेरिका सहित तमाम देशों ने सराहा। भारत अब चन्द्रयान-2 पर काम कर रहा है जिसे आने वाले दिनों में प्रक्षेपित किया जाएगा। चन्द्रयान मिशन की सफलता ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में भारत की योग्यता सिद्ध कर दी है। भारत अब एशिया के देशों, मसलन चीन और जापान की बराबरी में खड़ा हो गया है। चन्द्रयान के सफल प्रक्षेपण के साथ ही भारत दुनिया का छठा देश बन गया है जिसने चाँद के लिए अपना मिशन भेजा है।

चन्द्रयान-2

चन्द्रयान-2, भारत का दूसरा मिशन है जो चन्द्रमा पर भेजा जाएगा। इसमें एक आर्बिटर, लैंडर तथा रोवर शामिल होगा। भारत के भूस्थिर उपग्रह प्रक्षेपण यान (जी.एस.एल.वी-मार्क III) के द्वारा प्रमोचित इस यान में इसरो द्वारा निर्मित आर्बिटर तथा रोवर और रूसी अंतरिक्ष एजेंसी (रोसकोमॉस) द्वारा निर्मित लैंडर शामिल होगा। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य आर्बिटर पर स्थित यंत्रों के उपयोग से चंद्रमा के उद्भव तथा विकास के बारे में और अधिक जानकारी जुटाना तथा लैंडर एवं रोवर का प्रयोग करते हुए चंद्र सतह के नमूनों का विश्लेषण करना है।



चांद तक जा पहुंचा भारत

आर्बिटर के साथ 5 पेलोड भेजे जाने वाले हैं जिनके कार्यों में प्रमुख हैं, 1) चन्द्र सतह पर मौजूद प्रमुख तत्वों के मानचित्रण, 2) चन्द्र सतह पर वॉटर आइस (हिमजल) सहित अन्य तत्वों की खोज, 3) खनिज, पानी, तथा हाइड्रॉक्सिल की मौजूदगी संबंधी अध्ययन हेतु चन्द्रमा की सतह के काफी विस्तृत हिस्से का मानचित्रण, 4) चन्द्रमा के बहिर्मंडल का विस्तृत अध्ययन, तथा 5) चन्द्रमा के खनिज-विज्ञान तथा भूविज्ञान के अध्ययन।

चंद्रयान-2 के वर्ष 2013 में ही साकार होने की उम्मीद है। अभियान का वैज्ञानिक लक्ष्य कक्षीयान पर मौजूद उपकरणों का उपयोग करते हुए चंद्रमा के उद्भव और विकास के बारे में हमारी जानकारी तथा समझ में सुधार करना तथा रोबोट/रोवरों का उपयोग करते हुए चंद्रमा के आवरण प्रस्तर गुणों का अध्ययन करना है।

मंगल की ओर प्रयाण

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम चांद तक ही सीमित नहीं है। उसने अब मंगल ग्रह की ओर भी रुख किया है। भारत अपना मंगल अभियान नवंबर 2013 में भेजने की तैयारी में जुटा है। कुल 450 करोड़ रुपये की लागत का यह अभियान भारत को उन पांच चुनिंदा देशों की कतार में ला खड़ा करेगा जो ऐसे अभियान पूरा कर चुके हैं। इनमें अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन और जापान शामिल हैं।

‘इसरो’ के अनुसार उसके अत्याधुनिक प्रक्षेपण यान ‘पीएसएलवी-एक्सएल’ का इस्तेमाल नवंबर 2013 में शुरू होने वाले इस मंगल अभियान के लिए किया जाएगा। मंगल अभियान में इस्तेमाल होने वाले आर्बिटर का निर्माण चंद्रयान-एक की तर्ज पर किया जा रहा है। इसका कुल वजन 1350 किलोग्राम है। आर्बिटर के निर्माण कार्यों की समीक्षा की जा रही है और पूरी कोशिश की जा रही है कि इसे अक्टूबर 2013 तक तैयार कर लिया जाए। यान की निगरानी के लिए नियंत्रण केन्द्र में सभी तैयारियां की जा रही हैं तथा सहयोग के लिए दुनिया के अन्य देशों में स्थित नियंत्रण कक्षों से भी संपर्क किया जा रहा है।

इस अभियान के लिए नवंबर 2013 समय चुना गया है क्योंकि इस समय मंगल ग्रह धरती के करीब होगा। ऐसी खगोलीय घटना 27 वर्षों में एक बार घटित होती है। मंगलयान का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि क्या वहां जीवों के जीवन के लिए अनुकूल स्थितियां हैं? मंगलयान ग्रह की मिट्टी के नमूनों को इकट्ठा करके यह पता लगाएगा कि क्या कभी मंगल पर जीवन था? मंगल की सतह के बारे में भी जानकारियां हासिल की जाएंगी। मंगल ग्रह पर जीवन की संभावनाएं तलाशने पर विशेष जोर दिया जाएगा। मंगल मिशन के दौरान भारत मीथेन के रहस्य



भारत के मंगलयान का एक काल्पनिक चित्र

को सुलझा लेगा, साथ ही मंगल पर इसके अस्तित्व का पता लगाने की कोशिश की जाएगी। अभी तक की जानकारी के अनुसार हमारे सौरमंडल में केवल पृथ्वी पर जीवन है। वैसे शुक्र ग्रह हमारी पृथ्वी के करीब तो है लेकिन वहां की परिस्थितियां जीवन के प्रतिकूल हैं। मंगल धरती के बहुत करीब है, वहां वायुमंडल बहुत विरल है, और उसमें आक्सीजन की मात्रा बहुत कम है। साथ ही उसके इर्द-गिर्द चुंबकीय पदार्थ होने के बावजूद वहां कोई चुंबकीय क्षेत्र नहीं है, जोकि एक सवाल बना हुआ है। वैज्ञानिकों को आशा है कि इन सब सवालों के जवाब खोजने में यह अभियान महत्वपूर्ण साबित होगा।

इस अभियान में 15 किलोग्राम के पांच एक्सपेरिमेंटल पेलोड भेजे जाएंगे। इनमें कैमरे और सेंसर जैसे उपकरण शामिल हैं जो मंगल के वायुमंडल और उसकी दूसरी विशिष्टताओं का अध्ययन करेंगे। मंगल के लिए जो मीथेन सेंसर भेजा जाएगा उसका वजन 3.59 किलोग्राम होगा। यह सेंसर मंगल के पूरे डिस्क को छह मिनट के अंदर स्कैन करने में सक्षम है। दूसरा उपकरण थर्मल इंफ्रारेड स्पेक्ट्रोमीटर है। इसका वजन चार किलोग्राम होगा। यह मंगल की सतह का मापन करेगा। एक और

उपकरण मार्स कलर कैमरा है जिसका वजन 1.4 किलोग्राम है। इसके अलावा लाइमैन-अल्फा फोटोमीटर का वजन 1.5 किलोग्राम है तथा यह मंगल के वातावरण में एटॉमिक हाइड्रोजन का पता लगाएगा। मंगलयान को लाल ग्रह के निकट पहुंचने में आठ महीने लगेंगे। मंगल की कक्षा में स्थापित होने के बाद यह यान मंगल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां भेजना शुरू करेगा। भारत का मंगलयान मंगल के धरातल पर उतरेगा तो नहीं, लेकिन वह न्यूनतम 500 किलोमीटर तथा अधिकतम 8000 किलोमीटर की दूरी बनाए रखते हुए ग्रह की कक्षा में परिक्रमा करेगा।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान का सबसे भरोसेमन्द राकेट 'पीएसएलवी-एक्सएल' मंगलयान को लेकर श्री हरिकोटा से उड़ान भरेगा। पीएसएलवी मंगलयान को अंतरिक्ष में पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर देगा। इसके बाद मंगलयान के छह इंजन चालू होकर इसे पृथ्वी की उत्केंद्री कक्षा में ऊपर उठा देंगे। तब मंगलयान 600 से 2.15 लाख कि.मी. दूर रहते हुए पृथ्वी की परिक्रमा करने लगेगा। इसके बाद एक बार यान के इंजन फिर चालू किए जाएंगे जो मंगलयान को पृथ्वी की कक्षा से निकाल कर उसे सूर्यलक्ष्यी पथ पर मंगल की ओर अंतरग्रही यात्रा पर भेज देंगे। मंगलयान में ऊर्जा की आपूर्ति हेतु 760 वाट विद्युत उत्पादन करने वाले सौर पैनल लगे होंगे। यदि सब कुछ योजनानुरूप चला तो मंगलयान सितम्बर 2014 में मंगल की कक्षा में पहुंच जाएगा। पृथ्वी से बाहर ग्रहों के बीच किसी यान को भेजने का भारत का यह पहला अवसर होगा। यदि भारत अपने मंगलयान को सुरक्षित मंगल की कक्षा में पहुंचा कर उसे ठीक से स्थापित करके बखूबी नियंत्रित रख लेता है तो देश के लिए यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। इस तरह हम देखते हैं कि भारत ने अभी तक अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम में आशातीत सफलता प्राप्त की है तथा यह कार्यक्रम निरन्तर नयी बुलंदियों की ओर अग्रसर है। स्वर्णजयन्ती वर्ष में प्रस्तावित चन्द्रयान-2 तथा मंगलयान की सफलता भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगी।

पता:-

होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र

टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान

वी. एन. पुरव मार्ग, मानखुर्द

मुम्बई-400088

मोबाइल-09867210755